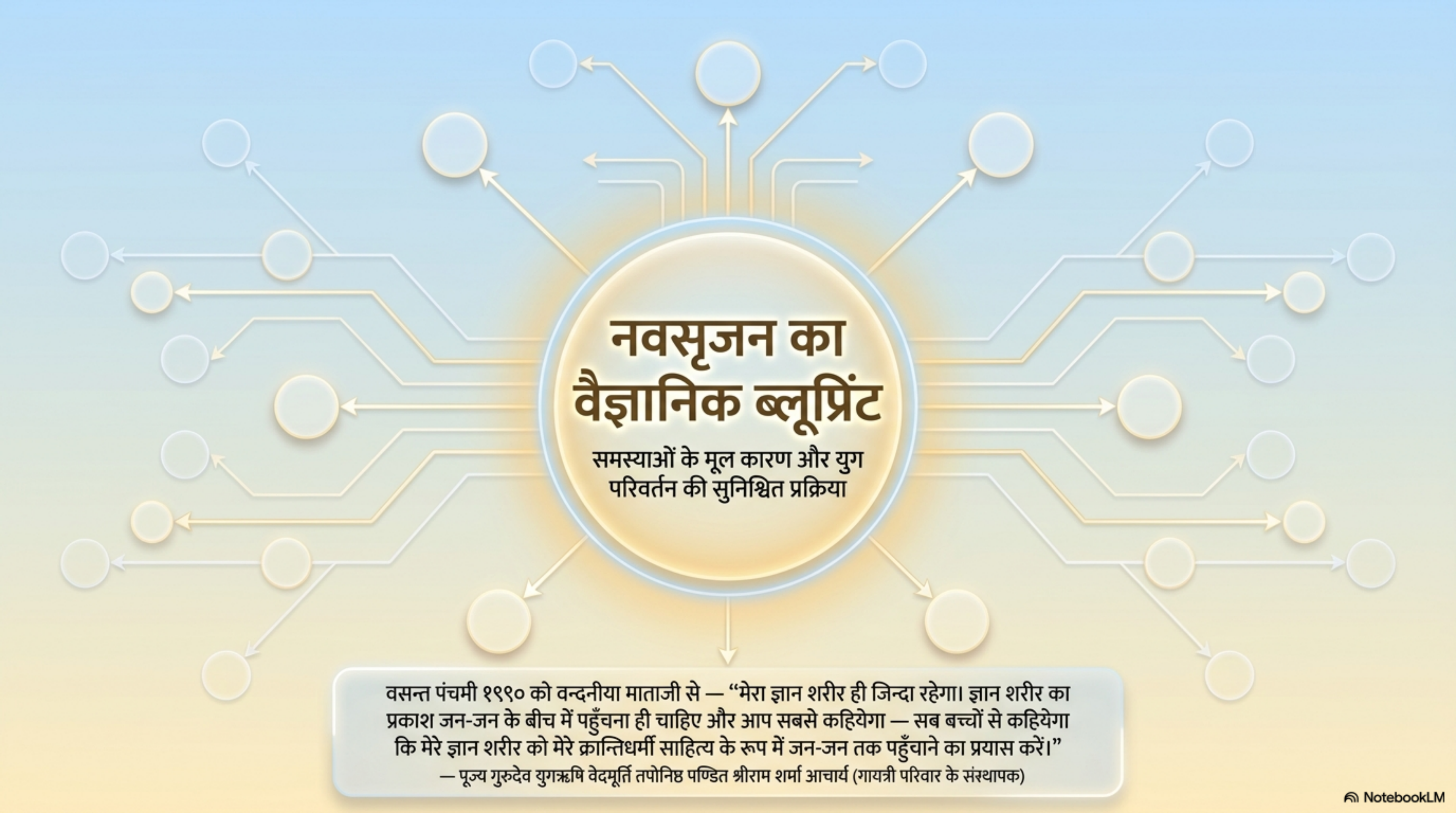




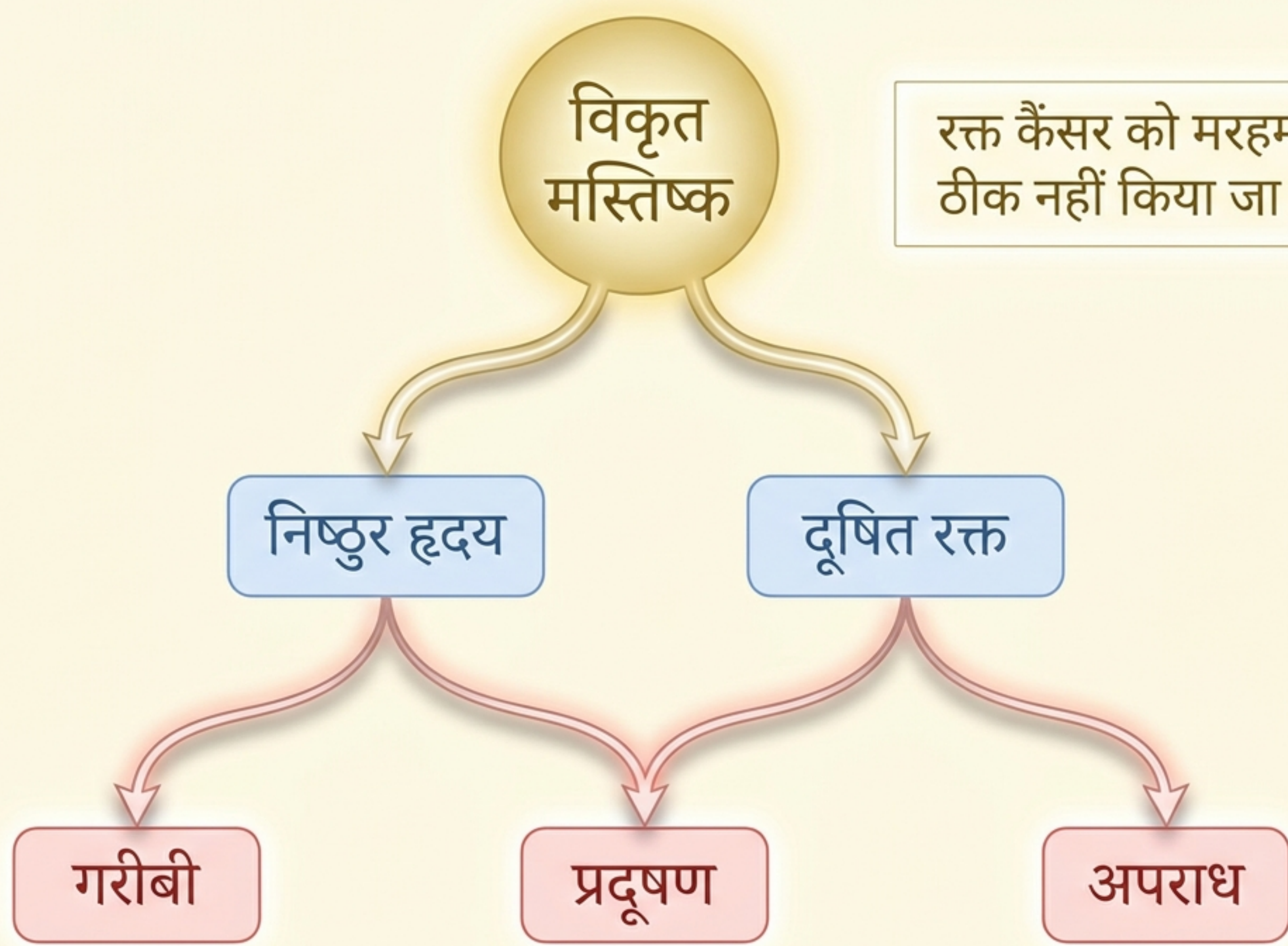
नवसृजन का वैज्ञानिक ब्लूप्रिंट

समस्याओं के मूल कारण और युग
परिवर्तन की सुनिश्चित प्रक्रिया

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

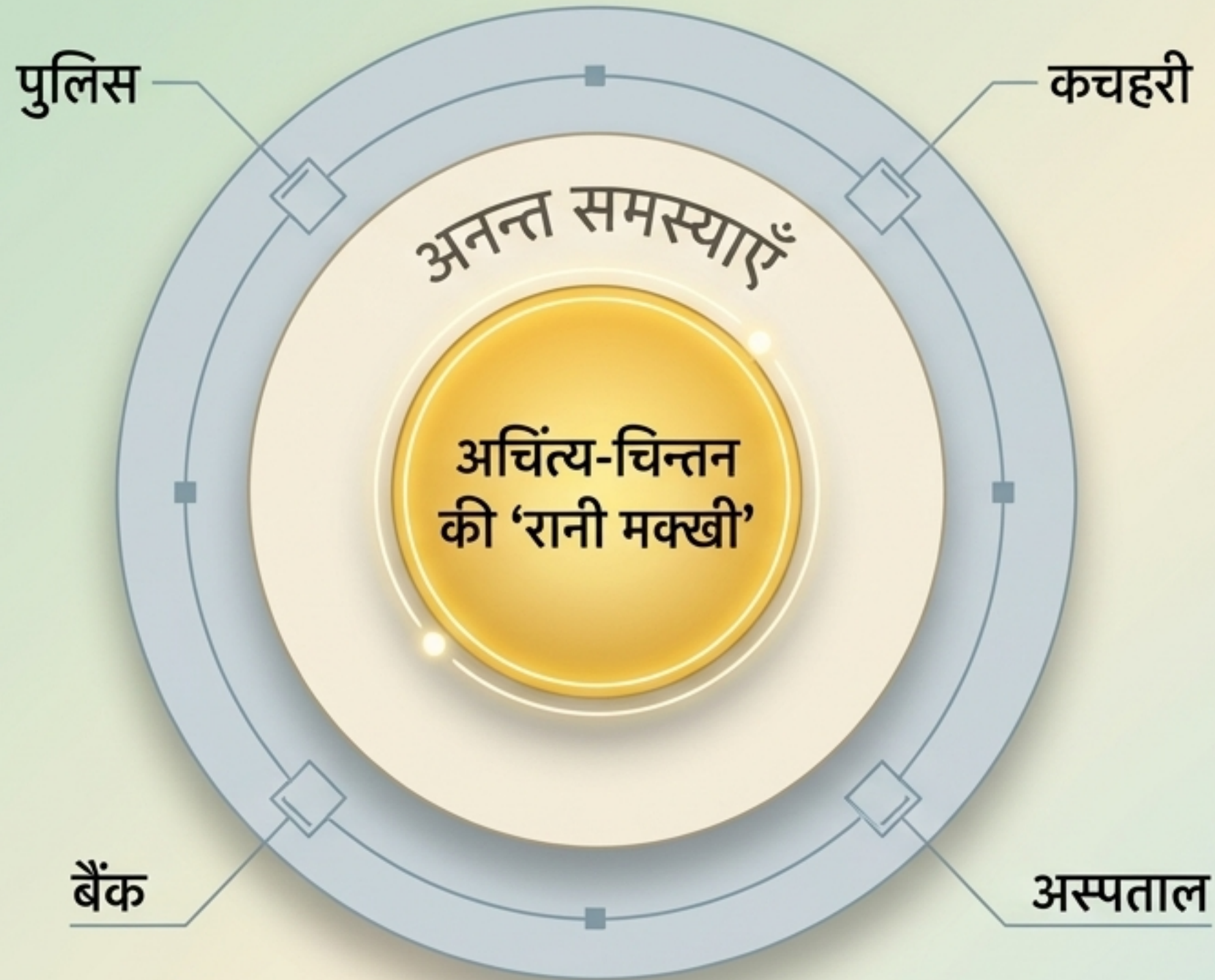
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में झा प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और सब बच्चों से कहिर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



रक्त कैंसर को मरहम पट्टी से ठीक नहीं किया जा सकता।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



जब तक मूल कारण ('रानी मक्खी')
अवांछनीय अण्डे जनती रहेगी,
बाहरी उपचार बौने ही सिद्ध होंगे।





वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा...
मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
— पूजा-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूजा गुरुदेव गुगुन्निषि वेदपूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य



भौतिक समाधान →
रसायनों से लक्षण मिटाना
मुरझाए पत्ते सींचने की
निरर्थक योजना।



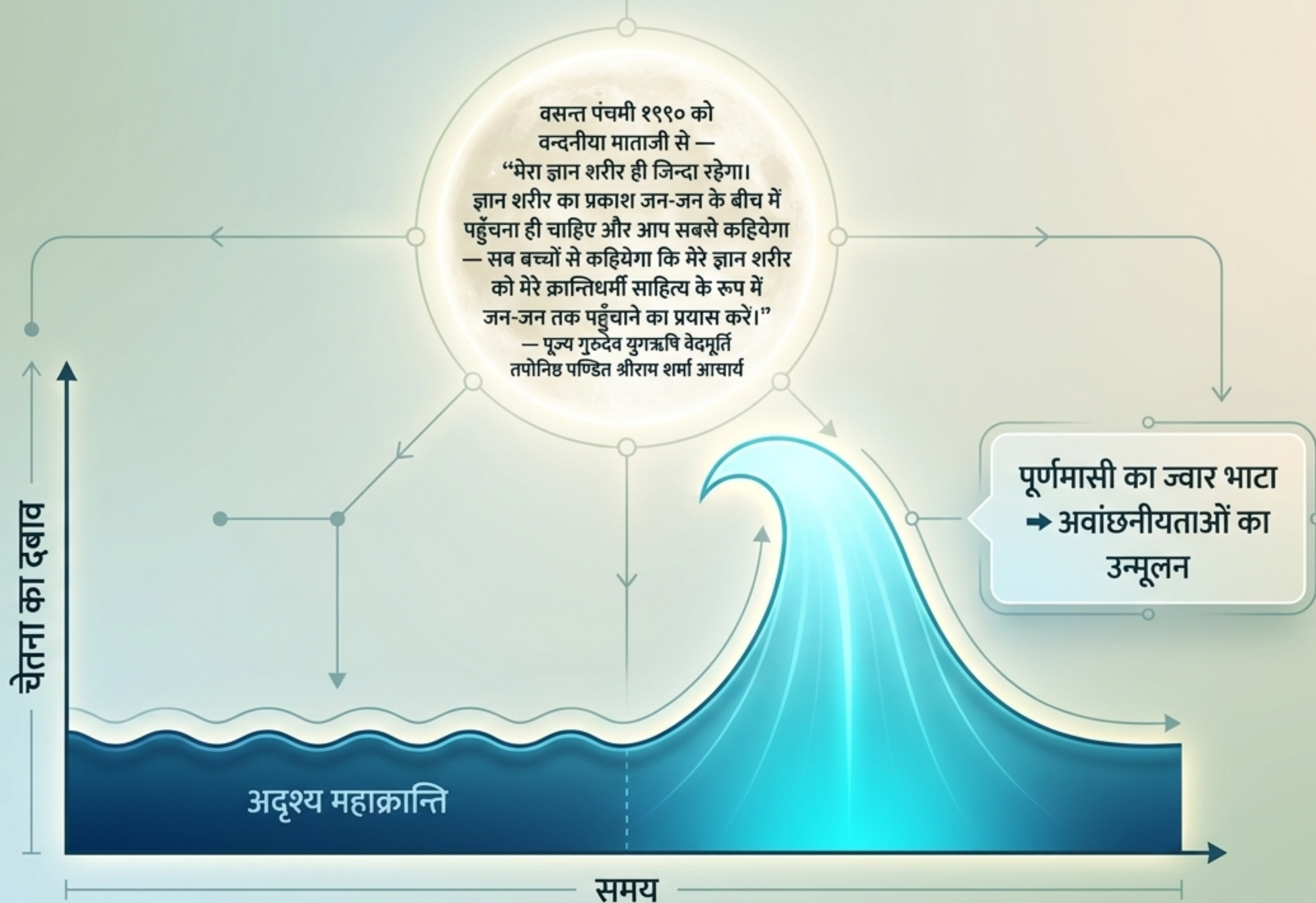
चेतना का परिष्कार →
दृष्टिकोण का परिवर्तन
जड़ तक खाद-पानी पहुँचाना।

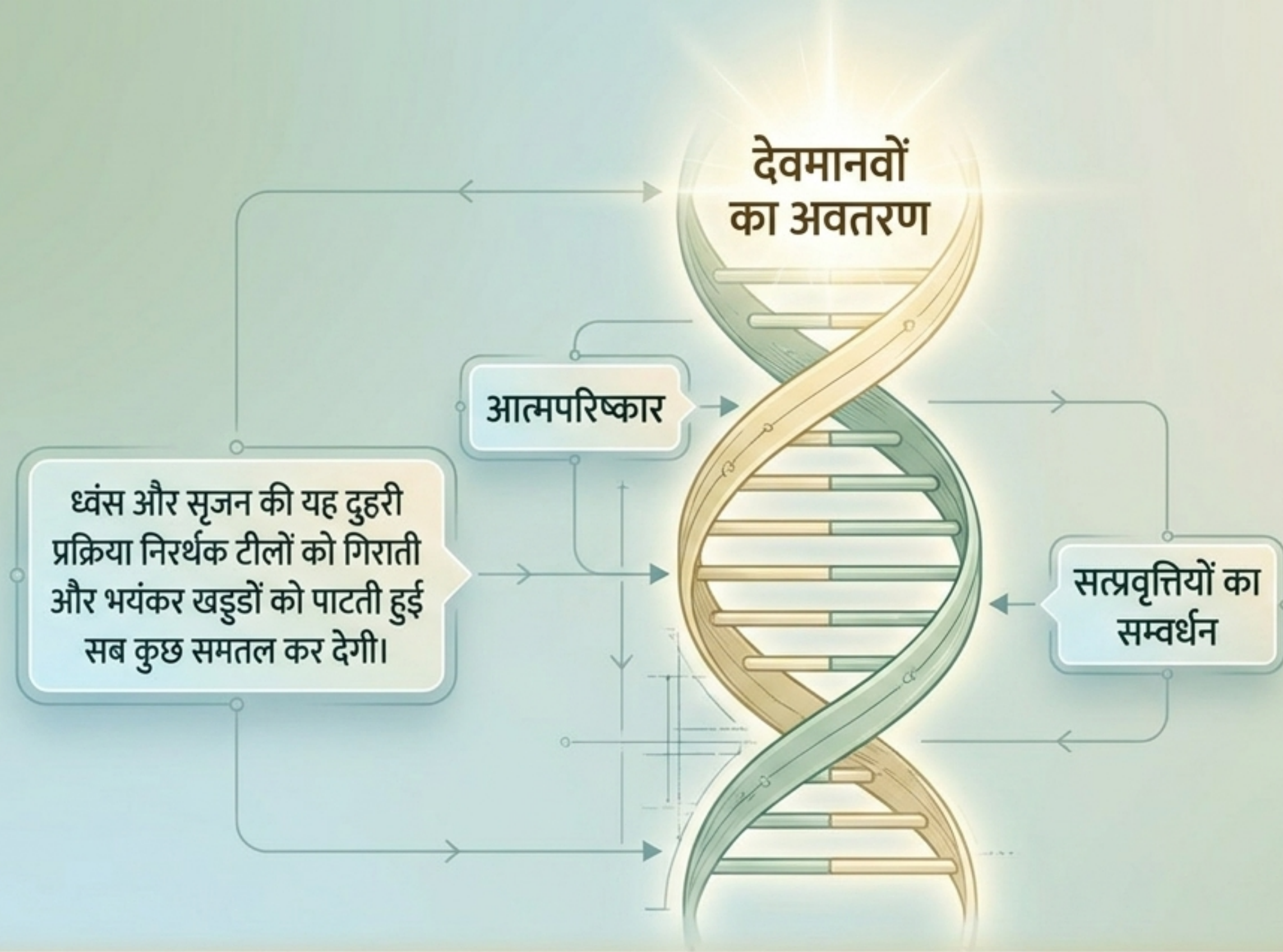


सृष्टि का नियन्त्रण निष्पिध्य नहीं है।
ध्वंस की तुलना में सृजन सदा भारी रहता है।

“वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रयकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)





वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा - सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अदृश्य में लहराता दैव प्रवाह।
जो आँखों से नहीं दिखता, वही सबसे बड़ी ऊर्जा धारण करता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से

– “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा ...

बाल की नोंक से भी छोटा
शुक्राणु / विचार बीज

मेरे ज्ञान शरीर को मेरे

क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

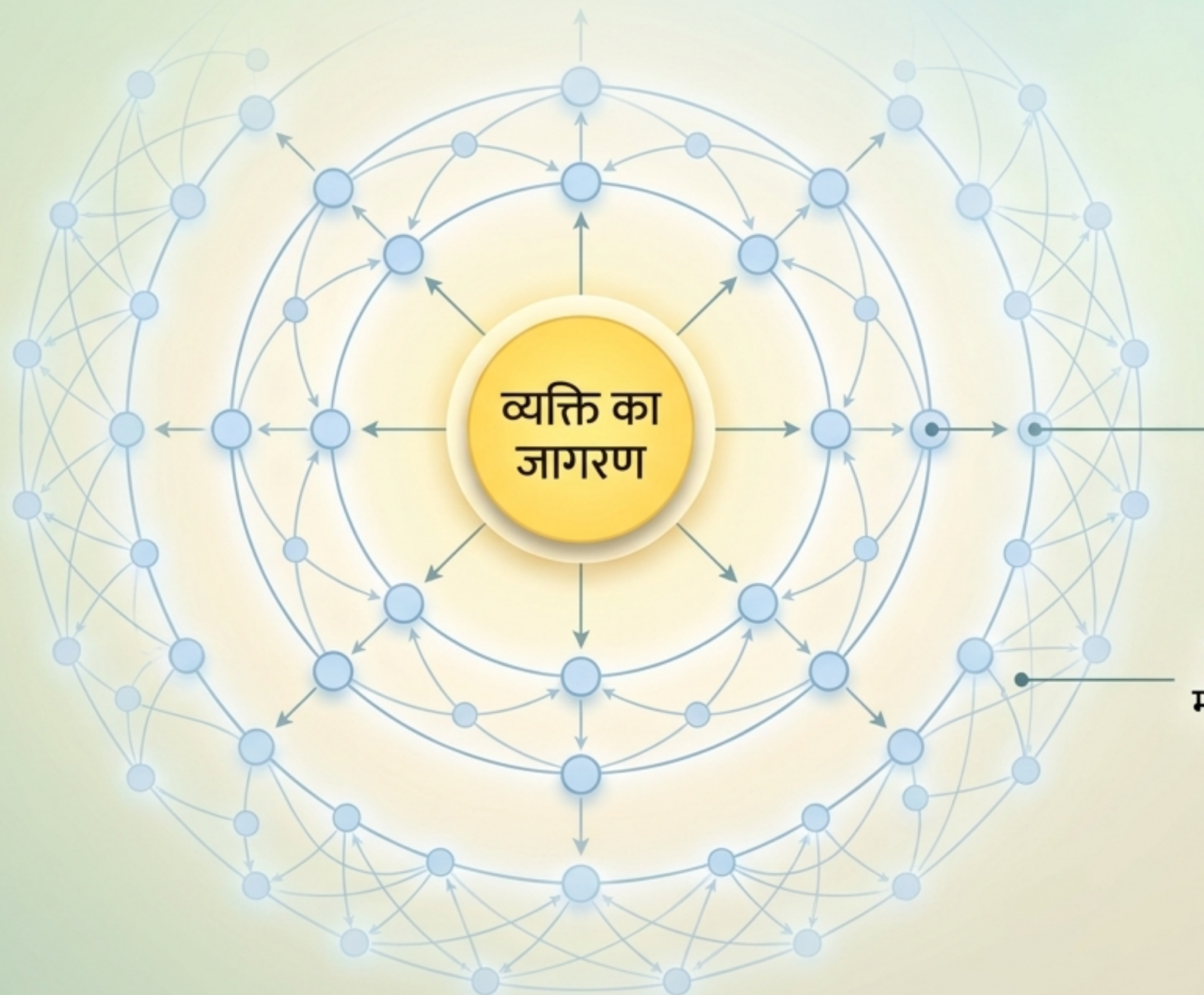
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

पराक्रमी प्रौढ़
/ महापरिवर्तन

देवमानवों की संगठित शक्ति

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को
मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



परिवार-परिकर
का प्रभाव

समूचे समाज का
महाकाल से जुड़ाव

वेश में शिक्षा



वेश में शिक्षा → केवल
आजीविका और बौद्धिक अहंकार

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से -
"सत्यं ज्ञानं परमं धर्मम्" - से प्रेरित होकर पढ़ाने का प्रयास करें।"

सत्यं ज्ञानं परमं धर्मम् ।
- मुख्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोविष्णु

वन में विद्या



वन में विद्या → संजीवनी,
जो व्यक्तित्व और प्रतिभा जगाती है

साक्षरता (शिक्षा)

आजीविका, सुविधा संग्रह

मस्तिष्क में जानकारीयाँ भरना

विक्षिप्तता, अपराध, अहंकार

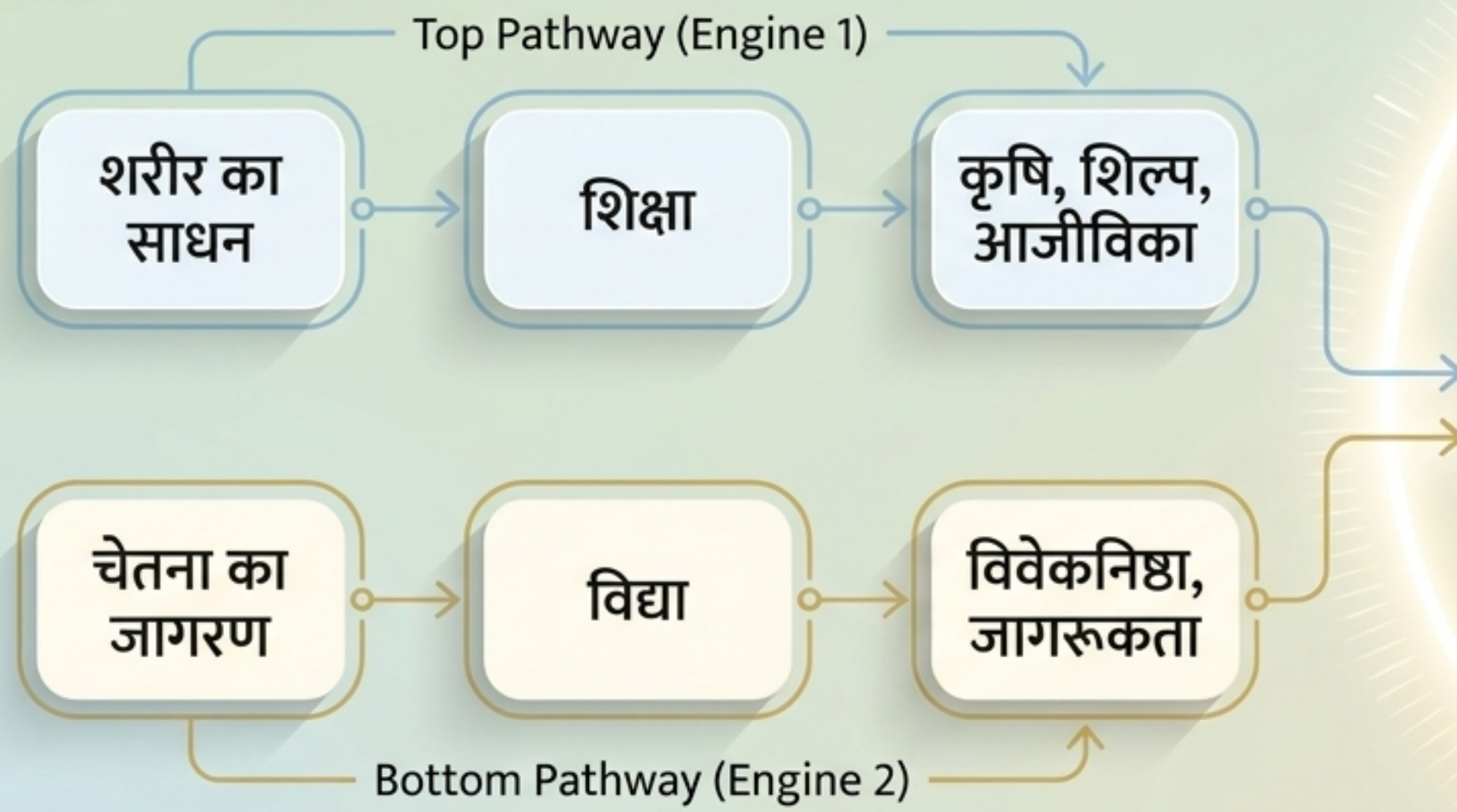
संजीवनी (विद्या)

व्यक्तित्व का विकास, प्रतिभा जागरण

अन्तःकरण को आत्मीयता से भरना

देवत्व का उदय, उदारता, विवेक

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ प्रांत श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्या रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए —
और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगशुद्धि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य

दोनों पहियों के बिना जीवन का रथ आगे नहीं बढ़ सकता।

औचित्य और विवेक के दो आधार
ही नवयुग की स्थापना करेंगे।

सादा जीवन

देवत्व का उदय

विद्या का जागरण

विचार
परिवर्तन

इक्कीसवीं सदी
का उज्ज्वल भविष्य /
धरती पर स्वर्ग

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ प्रांत श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)